समाजशास्त्र का अध्ययन क्षेत्र (Scope of Sociology)

किसी भी विज्ञान के अध्ययन क्षेत्र का अभिप्राय उस विज्ञान की सीमा-रेखा को स्पष्ट करना है। प्रायः सभी समाजशास्त्रियों द्वारा स्वीकार किया गया है कि समाजशास्त्र एक समाज-विज्ञान है। परन्तु सवाल यह उठता है कि समाज का अध्ययन करने वाला यह विज्ञान की सीमा क्या है? इसके अध्ययन क्षेत्र सीमित है या विस्तृत? इन्हीं प्रश्नों के उत्तर ढूढ़ने वालों विद्वानों के दो सम्प्रदाय सामने आते हैं— (i) स्वरूपात्मक सम्प्रदाय तथा (ii) समन्वयात्मक सम्प्रदाय।

(i) स्वरूपात्मक सम्प्रदाय (Formal School) :—

स्वरूपात्मक सम्प्रदाय के समर्थकों का मत है कि सामाजिक संबंधों का क्षेत्र इतना व्यापक है कि समाजशास्त्र में सभी प्रकार के संबंधों का अध्ययन करने से इसे एक विज्ञान नहीं बनाया जा सकता। समाजशास्त्र एक नवीन विज्ञान है जिसका अध्ययन क्षेत्र सीमित होना आवश्यक है। इस दशा में समाजशास्त्र के अंतर्गत कुछ विशेष प्रकार के संबंधों अथवा सामाजिक संबंधों के प्रमुख स्वरूपों का ही अध्ययन किया जाना चाहिए। केवल इसी के द्वारा समाजशास्त्र को एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में विकसित किया जा सकता है। जार्ज सिमेल, मैक्स वेबर, वीरकान्त, वान वीज तथा टॉनीज इस सम्प्रदाय के प्रमुख समर्थक हैं। इनके विचारों को हम निम्न रूप से समझ सकते हैं—

1. जार्ज सिमेल का विचार :— सिमेल ने यह स्पष्ट किया है कि प्रत्येक वस्तु को दो प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है — स्वरूप तथा अंतर्वस्तु। इनका मानना है कि स्वरूप और अन्तर्वस्तु दोनों अलग-2 होते हैं तथा दोनों का अलग-2 अध्ययन भी किया जा सकता है। जैसे- किसी बर्तन का आकार या बनावट उसका बाहरी स्वरूप है जबकि इसके अंदर पानी, शर्बत या विष, जो वस्तु है उसे अंतर्वस्तु कहा जाता है। इनका मानना है कि बाहरी स्वरूप नहीं बदल रहा बल्कि अंतर्वस्तु

बदल रही है। इस प्रकार दोनों अलग-2 है अतः दोनों का अलग-2 अध्ययन किया जा सकता है। वैसे ही भौतिक वस्तुओं के समान सामाजिक संबंधों का स्वरूप और अन्तर्वस्तु भी एक-दूसरे से पृथक होते है। चूंकि अंतर्वस्तु परिवर्तनशील है इसलिए बाह्य स्वरूप का ही अध्ययन किया जाना चाहिए। समाजशास्त्र को एक स्वतंत्र विज्ञान बनाने के लिए आवश्यक है कि इसके अध्ययन क्षेत्र में सामाजिक संबंधों की अन्तर्वस्तु को सम्मिलित न करके केवल संबंधों के स्वरूपों को ही सम्मिलित किया जाय। इसी के द्वारा समाजशास्त्रीय अध्ययनों का एक पृथक दृष्टिकोण विकसित किया जा सकता है।

2. मैक्स वेबर के विचार :— जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर का मानना है कि मानव के संबंधों का क्षेत्र बहुत व्यापक है। सबका अध्ययन कर इसे वैज्ञानिक नहीं बनाया जा सकता है इसलिए केवल सामाजिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाना चाहिए। वेबर ने सामाजिक क्रिया के दो प्रमुख विशेषताओं को बताया है — ⓐ सामाजिक क्रिया वह क्रिया है जो दूसरे लोगों के व्यवहारों को प्रभावित करती है, तथा ⓑ सामाजिक क्रिया अर्थपूर्ण होती है। उदाहरण के लिए. किसी व्यक्ति से नेता अथवा अनुयायी का संबंध रखना अथवा सामाजिक मानदण्डों के अनुसार व्यवहार करना एक सामाजिक क्रिया है। वेबर के अनुसार विज्ञान के रूप में ही विकसित किया जाना चाहिए।

3. वीरकान्त के विचार :— वीरकान्त भी समाजशास्त्र को एक विशेष विज्ञान के रूप में विकसित करने के पक्ष में रहे। आपके अनुसार "समाजशास्त्र उन मानसिक संबंधों का अध्ययन है जो व्यक्तियों को एक-दूसरे से बाँधते है।" इस दृष्टिकोण से वीरकान्त के अनुसार, यश, प्रेम, घृणा, सम्मान, समर्पण, स्नेह तथा लज्जा आदि वे प्रमुख मानसिक संबंध है जो विभिन व्यक्तियों को एक-दूसरे के समीप लाते है अथवा मानसिक एकता में बाँधा करते है। समाजशास्त्र के अंतर्गत केवल इसी प्रकार के संबंधों

का अध्ययन किया जाना चाहिए।

टॉनीज ने समाजशास्त्र को विज्ञान के रूप में स्थापित करने के लिए 'विशुद्ध समाजशास्त्र' की अवधारणा को विकसित किया। आपके अनुसार, समाजशास्त्र विशुद्ध तभी बन सकता है जब इसके अध्ययन क्षेत्र में अन्य विज्ञानों से पूरी तरह स्वतंत्र हैं। इस सम्प्रदाय के सभी समर्थक सामाजिक संबंधों के एक विशेष स्वरूप को ही समाजशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र से संबंधित मानते हैं, अतः इस सम्प्रदाय को स्वरूपात्मक सम्प्रदाय कहा जाता है।

स्वरूपात्मक सम्प्रदाय की आलोचना :—

फिचर ने स्वरूपात्मक सम्प्रदाय के समर्थकों की आलोचना करते हुए लिखा है "इन्हें समाजशास्त्री न कहकर सामाजिक दार्शनिक कहना उचित है क्योंकि इन्होंने सामाजिक जीवन की व्यवहारिक प्रकृति को समझने का कोई प्रयत्न नहीं किया।" वेबर एवं सिमेल के विचारों की कटु आलोचना सोरोकिन ने की है :—

1. स्वरूपात्मक सम्प्रदाय का विचार है कि समाजशास्त्र एक नवीन विज्ञान है, इस कारण इसका अध्ययन क्षेत्र सीमित होना चाहिए। लेकिन वास्तविकता यह है कि सामाजिक जीवन का अध्ययन हजारों साल पहले प्रारंभ हो गया था।
2. इस सम्प्रदाय के समर्थकों का यह कहना गलत है कि सामाजिक संबंधों के स्वरूपों का अध्ययन किसी दूसरे सामाजिक विज्ञान द्वारा नहीं किया जाता और इसलिए इनका अध्ययन समाजशास्त्र में किया जाना चाहिए। कानूनशास्त्र के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि यह प्रभुत्व, सत्ता, शक्ति, संघर्ष, स्वामित्व, आज्ञापालन तथा दासता जैसे संबंधों के स्वरूपों का अध्ययन समाजशास्त्र से भी अधिक स्पष्ट और व्यवस्थित रूप से करता है।
3. सिमेल वेबर तथा वीकान्त के विचारों में इतनी भिन्नता है कि उनके आधार पर समाजशास्त्र के किसी सुनिश्चित अध्ययन क्षेत्र का निर्धारण नहीं किया जा सकता।